अभिजन की धारणा का विकास और व्याख्या
(EVOLUTION OF THE CONCEPT OF ELITE AND ITS MEANING)

'अभिजन' (Elite) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 17वीं सदी में विशेष श्रेष्ठता वाली वस्तुओं का वर्णन करने के लिए किया गया और बाद में इस शब्द का प्रयोग **उच्च सामाजिक समुदायों** जैसे शक्तिशाली सैनिक इकाइयों और उच्च श्रेणी के सामन्त वर्ग के लिए किया जाने लगा। ऑक्सफोर्ड इंगलिश शब्दकोश में इस शब्द का प्रथम प्रयोग 1823 ई. में हुआ। लेकिन इस शब्द का ब्रिटेन और अमरीका में अधिक प्रयोग 1930 ई. के बाद ही किया गया, जबकि **विल्फ्रेड परेटो** द्वारा प्रतिपादित समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में अभिजन

1 H. D. Lasswell in Lasswell and Learner edited *'World Revolutionary Elites, Studies in Coercive Ideological Movement*, p. 4.

Scanned with CamScanner

के विचार का अधिक से अधिक प्रसार हुआ। परेटो के बाद **मोस्का, मेरी कोलाबिन्सका, एच. डी. लासवेल, सी. राइट मिल्स, टी. बी. बोटोमोर, कार्ल मैनहीम** और **शुम्पीटर**, आदि के द्वारा अभिजन की धारणा पर विचार व्यक्त किये गये।

अभिजन की धारणा विभिन्न व्यक्तियों की क्षमताओं में असमानता पर आधारित है और **परेटो** के अनुसार, **"वे व्यक्ति जो अपने कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत सबसे अधिक उच्च श्रेणी पर हैं, वे ही अभिजन हैं।"** परेटो प्राकृतिक मानवीय असमानताओं के आधार पर मानव समाज को दो वर्गों में बांटता है : (1) **अभिजन,** तथा (2) **अभिजनेतर।** अभिजन को उसने पुनः दो भागों में विभाजित किया है : (i) **शासक अभिजन** (Governing Elite) और (ii) **अशासक अभिजन** (Non-Governing Elite)। यह विभाजन उसने बुद्धि, संगीत, आदि विषयों के प्रति अभिरुचि, चरित्र, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव की शक्ति, आदि विषयों पर किया है। परेटो कट्टर अभिजनवादी (Elitist) था और वह अभिजन वर्ग का अस्तित्व सामाजिक सन्तुलन को बनाये रखने के लिए आवश्यक मानता था। परेटो के समस्त विचार का केन्द्र विन्दु **'शासक अभिजन'** ही है।

मोस्का ने अभिजन तथा अभिजनेतर जनता के मध्य सुव्यवस्थित सम्बन्ध स्थापित करते हुए एक नवीन राजनीतिक धारणा के प्रतिपादन का प्रयत्न किया। उसने समाज के दो वर्ग बतलाये : **शासक वर्ग** (Ruling Class) और **शासित वर्ग।** शासक वर्ग संख्या में कम, अपेक्षाकृत श्रेष्ठ, संगठित तथा अपने गुणों के कारण समाज द्वारा सम्मानित होता है। यह स्वयं अनेक सामाजिक समूहों से निर्मित होता है। उसने अपने शासक वर्ग को **'शासक अभिजन'** या **'राजनीतिक वर्ग'** कहा है। इसके अन्तर्गत वे व्यक्ति होते हैं जो राजनीतिक आदेश के पद को धारण करते हैं या जो प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इस विशिष्ट वर्ग की सदस्यता समय-समय पर बदलती रहती है। समाज के निम्न वर्गों से नवीन व्यक्ति इसमें सम्मिलित होते रहते हैं और कभी-कभी विद्यमान विशिष्ट वर्ग से स्थान पर क्रान्ति के माध्यम से पूर्णतया एक नवीन विशिष्ट वर्ग आ जाता है। मोस्का ने शासक वर्ग से अधिक व्यापक उपशासक वर्गों के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है जिसमें नवीन मध्यम वर्ग के सभी सदस्य सरकारी कर्मचारी, वैज्ञानिक, अभियन्ता और बुद्धिजीवी, आदि आ जाते हैं। इस दृष्टि से, **मोस्का की 'शासक अभिजन' की धारणा परेटो की तुलना में व्यापक लेकिन साथ ही कुछ अस्पष्ट भी है।**

परेटो और मोस्का की धारणा में एक अन्तर अभिजन और प्रजातन्त्र के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में है। **परेटो** का विचार है कि प्रत्येक समाज के शासक और शासित दो अलग वर्ग होते हैं और वह इस बात को अस्वीकार करता है कि इस दृष्टि से प्रजातन्त्रीय राज-व्यवस्था अन्य राज-व्यवस्थाओं से भिन्न होती है। मोस्का का विचार है कि इस दृष्टि से प्रजातन्त्रीय राज-व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से भिन्न होती है क्योंकि प्रजातन्त्र में शासक अल्पसंख्यक व शेष समाज के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है।

अभिजन के सम्बन्ध में आगे जो अध्ययन किये गये, उनमें **एच. डी. लासवेल** का अध्ययन निश्चित रूप से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। लासवेल, परेटो और मोस्का विशेष रूप से मोस्का का अनुगमन करता है। **लासवेल** लिखता है कि **"एक राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत शक्ति को धारण करने वाला वर्ग ही राजनीतिक अभिजन होता है। शक्ति धारण करने वाले वर्ग में नेतृत्व करने वाला वर्ग तथा वह सामाजिक समुदाय आते हैं जिसमें से यह वर्ग आता है जिसके प्रति एक निर्दिष्ट समय में यह उत्तरदायी होता है।"**[1]

इस प्रकार लासवेल ने राजनीतिक अभिजन को अन्य अभिजन वर्गों से अलग किया है जो शक्ति के प्रयोग से घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित नहीं हैं यद्यपि उनका पर्याप्त सामाजिक प्रभाव हो सकता है। राजनीतिक वर्ग (Political Class) राजनीतिक अभिजन (Political Elite) से अधिक व्यापक है, क्योंकि उसमें राजनीतिक अभिजन, राजनीतिक प्रति-अभिजन (Counter-elite), सामाजिक हितों, वर्गों या व्यापार समूहों के प्रतिनिधि, राजनीति में सक्रिय बुद्धिजीवी, आदि भी शामिल होते हैं। ये सभी राजनीतिक सहयोग, प्रतिद्वन्द्विता या प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। इनमें से राजनीतिक अभिजन वह समूह होता है जो एक विशेष समय पर शक्ति का वास्तविक रूप में प्रयोग करता है। इस वर्ग को पहचानना सरल होता है। यह वर्ग प्रायः उच्च प्रशासकीय

[1] H. D. Lasswell in Lasswell, Learner and Rothwellis, *The Comparative Study of Politics*.

Scanned with CamScanner

अधिकारियों, सैनिक अधिकारियों, उच्च कुलीन परिवारों, प्रभावशाली राजनेताओं व उद्योगपतियों, आदि से मिलकर बनता है।

अभिजन के अन्य प्रमुख लेखक **सी. राइट मिल्स** (C. Wright Mills) ने 'शासक-वर्ग' शब्द को उचित न मानकर उसके स्थान पर '**शक्ति अभिजन**' (Power Elite) शब्द का प्रयोग किया है। वह शक्ति शब्द में आर्थिक, राजनीतिक तथा सैनिक धारणाओं को मिलाकर 'शक्ति अभिजन' शब्द गढ़ता है। यह वर्ग सामाजिक दृष्टि से उच्च स्तरीय, सामंजस्यपूर्ण, एकतायुक्त तथा लोक नियन्त्रण को अस्वीकार करने वाला होता है। वह लिखता है कि "हम शक्ति की व्याख्या शक्ति के साधन रूप में कर सकते हैं। शक्ति अभिजन वे हैं जो आदेश देने वाले पदों को धारण करते हैं।"[1]

अभिजन की धारणा का कुछ और विस्तार से प्रतिपादन **टी. बी. बोटोमोर** के द्वारा किया गया है।[2] बॉटोमोर के अनुसार अभिजन या शासक वर्ग की अवधारणा ऐतिहासिक परिस्थितियों में सामन्तवाद के अन्त तथा आधुनिक पूंजीवाद की प्रारम्भिक देन है। उस समय से ही वर्ग समाज की अधिकांश सम्पत्ति तथा राष्ट्रीय आय के बड़े भाग का प्राप्तकर्ता एवं स्वामी बन बैठा है। इन आर्थिक लाभों को बनाये रखने के लिए वह एक विशिष्ट संस्कृति तथा जीवन दर्शन के निर्माण में भी सफल हो गया है।

राजनीतिक अभिजन प्रबल राजनीतिक प्रभावयुक्त राजनेताओं की सामूहिकता का नाम है। ये किसी समुदाय के लघु अल्पसंख्यक होते हैं जो महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों, प्रभावशाली सामाजिक वर्गों या प्रजातियों की सदस्यता, आर्थिक या सामाजिक समूह में अपनी समान शैक्षणिक पृष्ठभूमि, आदि के आधार पर राजनीतिक क्षेत्रों में प्रबल प्रभाव रखते हैं। इनके पास बड़ी मात्रा में राजनीतिक साधन होते हैं जिनका प्रयोग वे वांछित राजनीतिक परिणामों को प्राप्त करने के लिए करते हैं। ये राजनीतिक साधन नेतृत्व, कौशल राजनीतिक पद और विशेष राजनीतिक सूचनाओं की प्राप्ति, आदि के रूप में हो सकते हैं। सत्तारूढ़ राजनेताओं के पास औचित्यपूर्ण सत्ता, दण्ड एवं पुरस्कार, सम्मान, दल, मित्र, शास्तियां (Sanctions), आदि अनेक साधन होते हैं। वे राजनीतिक सामग्री जैसे धन और कर्मचारीगण, आदि के माध्यम से स्वपक्ष में बहुमत को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार अभिजन पर विचार करते हुए ये सभी विचारक **अभिजनों को एक ऐसा संगठित अल्पसंख्यक शासक वर्ग मानते हैं जो असंगठित प्रजा वर्ग पर अपनी प्रभुता शक्ति का प्रयोग करता है।** अभिजन की धारणा में एक प्रमुख विचार यह है कि अभिजन परिवर्तित होते रहते हैं।

एस. ई. फाइनर ने अभिजन से सम्बन्धित समस्त स्थिति को एक विभिन्न फांकों (Slices) वाले सन्तरे के आधार पर सुन्दर ढंग से समझाने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है :

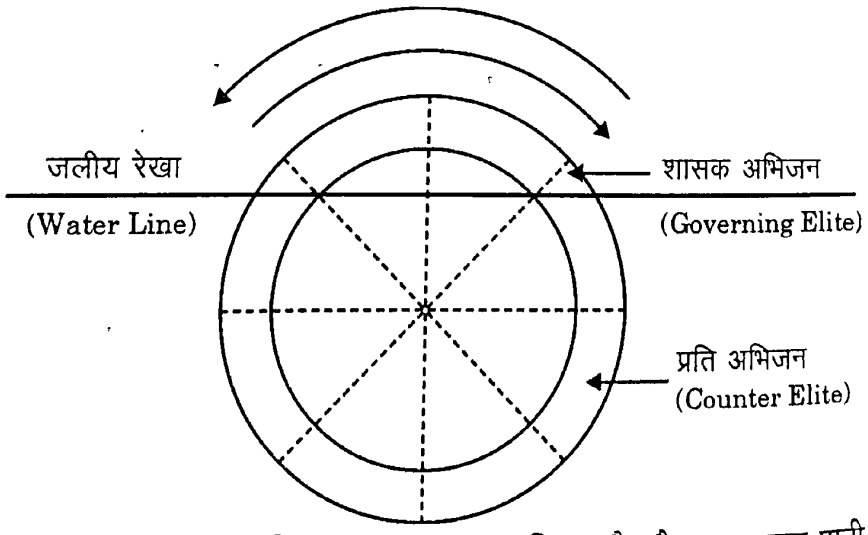

इस सन्तरे की चमड़ी या सतह (छिलका) समाज का अभिजन है और यह सन्तरा पानी में तैर रहा है। इसकी चमड़ी का जो भाग जलीय रेखा से ऊपर है, वह शासक अभिजन है। इस भाग के खण्ड समाज के

1 Wright Mills, Quoted from J. H. Meisel's *The Myth of the Ruling Class*, p. 23.
2 T. B. Bottomore : *Elites and Society*, Penguin Books (1964).

Scanned with CamScanner

उन समुदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो नेतृत्व की प्रतियोगिता में सफल रहे हैं और जिनके द्वारा सरकारी पद प्राप्त कर लिये गये हैं। सभी खण्ड जो जलीय रीमा के अन्दर हैं उन समुदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इस प्रतियोगिता में पराजित हुए हैं और जिनकी नीतियों के स्थान पर विजेता वर्ग की नीतियों को अपनाया गया है और छिलके का वह भाग जोकि इसे ढंके हुए है, प्रति-अभिजन (Counter-Elite) अर्थात् वर्तमान अभिजन का विरोधी है और जो शासक अभिजन की पदच्युति के लिए प्रयत्नशील है।[1]

एस. ई. फाइनर द्वारा की गयी इस व्यवस्था में '**अभिजन वर्ग में परिवर्तन**' (Circulation of Elites) का भाव निहित है। जिस प्रकार हवाओं, आदि के कारण जल में सन्तरे की स्थिति परिवर्तित होती रहती है, उसी प्रकार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप समाज के अन्तर्गत अभिजन में परिवर्तन होते रहते हैं।

राजनीतिक अभिजन का वर्गतन्त्रीय या कुलीनतन्त्रीय व्यवस्था से भेद—राजनीतिक अभिजन संगठित अल्पसंख्यक शासक वर्ग का नाम है और वर्गतन्त्रीय (Oligarchical) या कुलीनतन्त्रीय व्यवस्था में भी कुछ व्यक्तियों का शासन होता है, लेकिन राजनीतिक अभिजन की धारणा को कुलीनतन्त्र या वर्गतन्त्र के समान नहीं समझ लिया जाना चाहिए। इस तथ्य के बावजूद कि विशिष्ट वर्ग के शासन में कुछ मूलभूत कुलीनतन्त्र या वर्गवादी व्यवस्था के तत्व होते हैं, इनमें महत्वपूर्ण अन्तर है। निहित हितों की रक्षा और वृद्धि कुलीनतन्त्र या वर्गवादी व्यवस्था के समान ही अभिजन वर्ग के शासन का भी एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, लेकिन इनमें भेद इस तथ्य में देखा जा सकता है कि अभिजन वर्ग के शासन में वह परम्परागत भव्यता या स्वयं को स्थायित्व प्रदान करने की प्रवृत्ति नहीं होती, जो कुलीनतन्त्र या वर्गतन्त्र के **सबसे प्रमुख तत्व हैं।**[2]

राजनीतिक अभिजन में '**निरन्तर परिवर्तन**' (Circulation of Elites) होता रहता है और यही बात राजनीतिक अभिजन को कुलीनतन्त्र एवं वर्गतन्त्र से अलग कर देती है। कुलीनतन्त्र या वर्गतन्त्र अरस्तू की इस मान्यता पर आधारित है कि "**जन्म की घड़ी से ही कुछ लोग शासक होने के लिए और अन्य शासित होने के लिए निश्चित होते हैं।**"[3] लेकिन अभिजन की धारणा का मूल विचार यह है कि अभिजन की स्थिति को योग्यता के आधार पर किसी के भी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

अभिजन की विशेषताएं
(CHARACTERISTICS OF THE CONCEPT OF ELITE)

अभिजन समाज का एक विशिष्ट वर्ग होता है जिसका कार्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को नेतृत्व प्रदान करना होता है। **मोस्का** ने अपनी रचना *'The Ruling Elite'*, **सी. राइट मिल्स ने** *'The Power Elite'* **और टी. बी. बोटोमोर** ने *'Elite and Society'* में अभिजन वर्ग का विशद् विवेचन प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं के आधार पर अभिजन वर्ग की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है, जो इस प्रकार है :

(1) **अल्पसंख्यक उच्च वर्ग**—समानता प्राणी मात्र की आकांक्षा, लेकिन असमानता प्रकृति का नियम है। समाज में कुछ व्यक्ति अधिक विद्या, बुद्धि, योग्यता और साधन-सम्पन्न होते हैं जबकि अधिकांश व्यक्ति अपेक्षाकृत अल्प मात्रा में ही इनके स्वामी होते हैं। किसी भी राज-व्यवस्था में सभी व्यक्तियों के समान महत्व की बात केवल शब्दों में ही हो सकती है व्यवस्था में नहीं। लोकतन्त्र में भी राज-व्यवस्था पर वास्तविक रूप में नियन्त्रण इस अल्पसंख्यक उच्च वर्ग का ही होता है और यही अभिजन है। अन्य किसी भी शासन व्यवस्था तथा लोकतन्त्र में अभिजन वर्ग की स्थिति में यही अन्तर होता है कि लोकतन्त्र में अभिजन वर्ग पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सामान्य जन का नियन्त्रण होता है और सामान्य जन के द्वारा अभिजन वर्ग में परिवर्तन किया जा सकता है, लेकिन अन्य शासन व्यवस्थाओं में अभिजन वर्ग पर सामान्य जनता का नियन्त्रण सम्भव नहीं हो पाता।

(2) **विशिष्ट महत्व**—सभी राज-व्यवस्थाओं में अभिजन वर्ग को विशिष्ट महत्व प्राप्त होता है। अभिजन वर्ग देश की राजनीतिक दिशा निश्चित करता है और यह भी निर्णय करता है कि किन उपायों को अपनाकर

1 S. E. Finer, *Comparative Government*, p. 27.
2 Verney, *op. cit.*, p. 161.
3 "From the hour of their birth, some are marked out for subjection and some for command." —*Aristotle*

Scanned with CamScanner

इस लक्ष्य को प्राप्त किया जायगा। अभिजन वर्ग सत्ता के केन्द्र में स्थित होता है और सामान्य जनता भी चाहती है कि अभिजन वर्ग को यह विशिष्ट स्थिति प्राप्त रहे। सामान्य जनता भी सोचती है कि अभिजन वर्ग की यह विशिष्ट स्थिति उनके हितों की रक्षा और वृद्धि में सहायक होगी। इसके अतिरिक्त इससे उन्हें एक मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि भी प्राप्त होती है।

(3) **विशिष्ट हित**—अभिजन वर्ग का जीवन के प्रति सामान्य जन से पृथक अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। सामान्य जन की तुलना में उनकी भौतिक और मानसिक आवश्यकताएं अधिक होती हैं और यही उनके विशिष्ट हितों को जन्म देती है। अभिजन वर्ग और सामान्य जनता के हितों में अन्तर तो होगा ही, लेकिन इन दोनों के हितों में ऐसा अन्तर नहीं होना चाहिए जिसे पाटा न जा सकता हो।

(4) **अभिजन वर्ग में परिवर्तन**—अभिजन वर्ग में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। आज जो अभिजन वर्ग है, उसका विरोध करने के लिए 'प्रति-अभिजन' (Counter-Elite) का जन्म होता है, वह 'प्रति-अभिजन' स्वयं के लिए शासक अभिजन की स्थिति प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और जब इसे सफलता प्राप्त होती है तो इससे अभिजन वर्ग में परिवर्तन हो जाता है। अभिजन वर्ग में परिवर्तन सभी शासन व्यवस्थाओं में होते हैं अन्तर केवल यह है कि लोकतन्त्र में तो चुनाव के रूप में अभिजन वर्ग में परिवर्तन का एक संवैधानिक मार्ग होता है लेकिन अन्य शासन व्यवस्थाओं में क्रान्ति और बल प्रयोग के आधार पर अभिजन में परिवर्तन होता है। भारत और अमरीका में 1977, 1980, 1989, 1991 तथा उसके बाद भी चुनाव के आधार पर अभिजन वर्ग में परिवर्तन हुए लेकिन 1978-79 में ईरान में अभिजन वर्ग में परिवर्तन के लिए क्रान्ति और बल प्रयोग के तरीके को अपनाया गया।

अभिजन की धारणा और लोकतन्त्र
(CONCEPT OF ELITE AND DEMOCRACY)

अभिजन की धारणा और लोकतन्त्र एक-दूसरे के अनुकूल हैं अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण प्रचलित हैं। **प्रथम** धारणा के अनुसार अभिजन की धारणा और लोकतन्त्र के विचार में विरोध है और यह विरोध दो रूपों में देखा जा सकता है : **प्रथम,** प्रजातान्त्रिक राजनीतिक विचार व्यक्तियों की मूलभूत समानता के सिद्धान्त में विश्वास करता है, लेकिन अभिजन वर्ग की अवधारणा व्यक्तियों की असमानता पर आधारित है। **द्वितीय,** प्रजातन्त्र बहुमत शासन के विचार पर आधारित है, लेकिन अभिजन वर्ग की धारणा में यह विचार निहित है कि शासक वर्ग अल्पसंख्यक समुदाय होता है। इन्हीं आधारों पर अभिजन वर्ग की धारणा के प्रारम्भिक प्रतिपादक कार्लायल और नीत्शे प्रजातन्त्र की धारणा के विरोधी थे और मोस्का भी प्रारम्भ में प्रजातन्त्र का समर्थक नहीं था, उसकी विचारधारा में तो आगे चलकर परिवर्तन हुआ। बॉटोमोर भी समानता का प्रबल समर्थक है और इसी आधार पर वह अभिजन वर्ग की धारणा को लोकतन्त्र के विरुद्ध मानता है।

द्वितीय धारणा के अनुसार प्रजातन्त्र और अभिजन वर्ग की धारणा में परस्पर कोई विरोध नहीं है। वस्तुस्थिति भी यही है कि इसमें पारस्परिक विरोध उतना नहीं है जितना कि सतही तौर पर दिखायी देता है। प्रजातन्त्र को सिद्धान्त रूप में भले ही 'समस्त जनता का शासन' या 'बहुमत का शासन' कहा जाए, लेकिन व्यवहार में बहुमत वर्ग के द्वारा प्रभावदायक शासन सम्भव नहीं होता। राजनीतिक प्रजातन्त्र का महत्व केवल इस बात में होता है कि समाज के अन्तर्गत शक्ति के स्थान सिद्धान्त रूप में प्रत्येक के लिए खुले रहते हैं, शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता होती रहती है और शक्ति के धारक निर्वाचकों के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

शुम्पीटर और **कार्ल मैनहीम,** आदि के द्वारा प्रजातन्त्र की इसी धारणा को अपनाया गया है और अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि राजनीतिक प्रजातन्त्र का अभिजन वर्ग की धारणा के साथ कोई विरोध नहीं है। **कार्ल मैनहीम** लिखते हैं, "**वास्तविक नीति का निर्धारण अभिजनों के हाथ में होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि समाज लोकतान्त्रिक नहीं है।**"[1] **मिचेल्स** भी राजनीतिक अभिजन और प्रजातन्त्र में परस्पर कोई विरोध नहीं देखता है। उसका कथन है कि लोकतन्त्र और सर्वाधिकारवाद में अन्तर बहुमत शासन और अल्पसंख्यक वर्ग के शासन के रूप में नहीं है। इनमें अन्तर यह है कि सर्वाधिकारवादी व्यवस्था में अल्पसंख्यक वर्ग निरंकुश रूप में शासन करता है, लेकिन लोकतन्त्र में बहुमत द्वारा इस शासक वर्ग को पदच्युत किया जा सकता है

1 "The actual shaping of policy is in the hands of elites, but this does not mean that the society is not democratic."
—*Karl Manneheim*

Scanned with CamScanner

या बहुमत के हित में निर्णय लेने के लिए बाध्य किया जा सकता है। इस प्रकार अवसरों की समानता तथा खुली प्रतियोगिता के आधार पर ये विचारक अभिजन वर्ग का लोकतन्त्र के साथ तालमेल स्थापित करते हैं।

इसके अतिरिक्त यदि प्रजातन्त्र को एक राजनीतिक व्यवस्था से अधिक एक समाज व्यवस्था के रूप में समझा जाता है, तो भी इसका अभिजन की धारणा से कोई विरोध नहीं है। क्योंकि लोकतान्त्रिक समाज की जो मूल धारणा '**समानता**' है, उसकी व्याख्या '**अवसर की समानता**' के रूप में की जा सकती है।

बोटोमोर के द्वारा अपनी समानतावादी विचारधारा के आधार पर लोकतन्त्र में अभिजन की धारणा का जो विरोध किया गया है वह एक बौद्धिक स्थिति मात्र ही है, व्यावहारिक धारणा नहीं। उनकी समानता की अवधारणा तो प्रजातन्त्र को असम्भव बना देगी। पूर्ण समानता की धारणा न तो व्यावहारिक है और न ही वांछनीय। **मॉण्टेस्क्यू** ने ठीक ही कहा है कि "**यदि असमानता से प्रजातन्त्र भ्रष्ट हो जाता है तो साथ ही अति समानता की भावना से भी वह नष्ट हो जायगा।**"[1] **सारटोरी** इस सम्बन्ध में ठीक ही लिखते हैं कि "**अति समानता का अर्थ है, नियन्त्रण, शासन और सत्ता का अभाव।**"[2] लोकतन्त्र के अधिकारी विद्वान **ब्राइस** ने भी निश्चयात्मक शब्दों में कहा है कि "**सम्भवतः किसी भी प्रकार के शासन को महान नेताओं की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती, जितनी कि लोकतन्त्र को।**" वास्तव में, लोकतन्त्र को यदि सफलता प्राप्त करनी है तो उसे कार्य-कुशलता का परिचय देना होगा और लोकतन्त्र के लिए इसका परिचय देना उसी समय सम्भव है, जबकि लोकतन्त्र का अभिजन वर्ग के साथ समन्वय स्थापित किया जाए। अभिजन वर्ग एक शाश्वत तत्व है और उसकी प्रधानता को स्वीकार करते हुए लोकतन्त्र अपने आपको जीवित रख सकता है। 1971 ई. में जब ब्रिटिश चांसलर **लॉर्ड हेल्शाम** भारत आये, तब उन्होंने स्पष्टतया कहा था कि "**अभिजन की अवहेलना लोकतन्त्र के लिए एक वास्तविक संकट है।**"[3] न केवल अभिजन वर्ग की धारणा के लिए लोकतन्त्र में स्थान है, वरन् लोकतन्त्र में अभिजन वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

... और समाजवादी धारणा

Scanned with CamScanner